महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय) (A
Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

'ब्लैक थिएटर' की झलक प्रस्तुत करता नाटक ' द स्लेव ' का

हिंदी विश्वविद्यालय के नाटयकला एवं फिल्म अध्ययन विभाग द्वारा मंचन

वर्धा- दि. 15 : विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के नाटयकला एवं फिल्म अध्ययन विभाग द्वारा ' द स्लेव ' (कहानी एकगुलाम की) इस नाटक का मंचन हबीब तनवीर सभागार में किया गया।

अमरिका के ब्लैक थिएटर की यह नायाब नाट्यकृती प्रसिद्ध लेखक, कवी लेराई जोन्स द्वारा लिखी गयी है। प्रथम विश्व मराठी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष तथा प्रसिध्द दलित चिंतन,आलोचक डॉ. गंगाधर पानतावने द्वारा उसका मराठी अनुवाद किया गया। नाटयकला एवं फिल्म अध्ययन विभाग के असिस्टेन्ट प्रोफेसर डॉ. सतीश पावडे ने इस नाटक का अनुवाद, संपादन, पुनर्लेखन तथा निर्देशन किया।

अमरिका में व्याप्त 'नस्लभेद'की समस्या को इस नाटक में चित्रित किया गया है। अश्वेतो के आंदोलन, गोरो की वंशवादी, नस्लवादी मानसिकता, तथा आंतरनस्लीय विवाह का प्रतिफलन, एक नये समाज का निर्माण, उदारमतवादी समुह का खोखलापन आदी सवालों को यह नाटक हांशिए पर लाता है। साथ ही अश्वेत आंदोलनवादी नेता को व्यक्ती और समष्ठी के मानसिकता पर आलोचित भी करता है। यह व्दंद इसे नाटक में बखुबी चित्रित किया गया है।

This document was Smart PDF Creator
To remove this message purchase product at www.SmartPDFCreator.com

ब्लैक थिएटर अमेरिका में 'ऑफ ऑफ ब्राडवे' रंगमंच है, जो अश्वेतों का परिवर्तनवादी, क्रांतिकारी रंगमंच है। जो मानवीय न्याय की अपने नाटकों द्वारा गुहार लगाता है। न्याय और सम्मान की लडाई का आगाज करता है। जो भारतीय दलित रंगमंच का भी प्रेरणास्थल रहा है। यह एक क्रांतिकारी, रंगमंच है। ' द स्लेव' इसी क्रांतिकारी 'ब्लैक रंगमंच' की एक बहुचर्चित नाट्यकृति है। जिसके मंचन ने विश्वस्तरीय रंगमंच की झलक तथा निग्रो समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक, नस्लीय संघर्षोका यथार्थवादी चित्र दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत किया।

इस नाटक में रश्मि पटेल,धर्मप्रकाश 'मंटो' तथा आशुतोष चन्दन ने मुख्य भुमिकाएं अदा की। सहाय्य क निर्देशक रवि मुन्ढे थे। संगीत निर्देशन अखिलेश दीक्षित ने किया। प्रकाश आयोजन- नीरज उपाध्याय, दृश्य विन्यास- गौरव मिश्रा, रूपसज्जा- मनीष कुमार, निर्माण प्रबंधन- अश्विनी कुमार सिंह का था।

इस नाटक का निर्माण विभागाध्यक्ष प्रो. सुरेश शर्मा ने किया। डॉ. ओमप्रकाश भारती, डॉ विधु खरे दास, डॉ. रयाज हसन ने निर्माण सलाहागार के रूप में कार्य किया। प्रो. प्रभाकर बागले,प्रो. त्र्यंबक महाजन (औरगांबाद) तथा प्रो. रमेश लखमापुरे

(नागपुर) ने इस नाटक के मंच विन्यास तथा निर्माण आकल्पन हेतु विशेष सहयोग दिया।

इसके पूर्व यह नाटक विश्वविद्वालय, एसिटेज इंडिया, कैम्पस थिएटर इलाहाबाद, द्वारा आयोजित,राष्ट्रीय संगोष्ठी में भी किया गया जिसे देश के विभिन्न भागों से आये रंगमंच के विविध हस्तियों, रंगकर्मियो द्वारा सराहा गया। यह नाटक विश्व रंगमंच की एक प्रसिध्द नाटयकृति होने के साथ विश्व के श्वेत-अश्वेतों के संघर्ष को भी उजागर करता है। साथही एक नये दुनिया के निर्माण का आगाज करता है। जो युवा दर्शको द्वारा भी काफी सराहा गया। अमरिकन परिप्रेक्ष निग्राईड चरित्र, गोरे लोगों की मानसिकता, उनके व्दंद, संघर्ष को रश्मि पटेल, धर्म प्रकाश 'मन्टो' तथा आशुतोष चंदन ने अपने सराहनीय अभिनय द्वारा दर्शकों को बांधे रखा।

बी. एस. मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी

This document was created using Smart PDF Creator
To remove this message purchase the product at www.SmartPDFCreator.com